मानव के बौद्धिक विकास में शिक्षा का महत्वः ऐतिहासिक दृष्टिकोण

डॉ० दीपक प्रकाश वर्धन
एसोसिएट प्रोफेसर
पी०जी० विभाग इतिहास
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय
आरा (बिहार)

-

सौरभ
सहायक प्रध्यापक(इतिहास)
जी०एल०ए० कॉलेज,डालटनंगज

सारांश

शिक्षा मानव जीवन का महत्वपूर्ण तत्व होता है। इसके अभाव में मनुष्य का व्यक्तित्व अधूरा रहता है। शिक्षा मनुष्य को समृद्ध और उन्नत बनाती है। जब भी व्यक्ति किसी समस्या या विपत्ति में फँसता है तो, उसकी शिक्षा ही उसे परिस्थितियो से सामना करने का सामर्थ प्रदान करती है। इसलिए शास्त्रों में भी कहा गया है कि '' विद्याहीन मनुष्य पशुवत्'' होता है अर्थात् विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान होता है। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है, उसके बुद्धि एवं व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारंभ से ही शिक्षा मानव को नियंत्रित एवं निर्देशित करती रही है। मानव जीवन के प्रारंभ से लेकर वर्त्तमान जीवन तक शिक्षा की महत्तता बनी हुई है। जब पृथ्वी पर मानव जीवन की उत्पत्ति हुई, तब मानव भी पशुवत जीवन व्यतित करते थे, धीरे- धीरे उनमें बौद्धिक चेतना का विकास हुआ उसके बाद मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्त्तन आए।

एतिहासिक तथ्यों के संश्लेषण से हमें ज्ञात होता है कि मानव ने सबसे पहले शिकार एवं कंदमूल फसलों आदि को अपना भोजन बनाया। इसके बाद आग के अविष्कार ने उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया, मनुष्य पकाकर भोजन एवं स्थायी जीवन जीने लगा। धीरे-धीरे उनके बौद्धिक चेतना का और विकास हुआ इसके बाद उन्होनें जीवन संचालन एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का इस्तेमाल प्रारंभ किया जो कि सामान्य एवं चित्रात्मक होती थी धीरे-धीरे विकसीत होती गई और लिपि का अविष्कार हुआ। तत्पश्चात् शिक्षा की नींव प्रारंभ हुई। हम इतिहास के माध्यम से यह जान पाए है कि शिक्षा का प्रारंभिक प्रमाण वैदिकालीन संस्कृति में वृहद रूप से

दिखाई पड़ता है। इस संस्कृति में शिक्षा का मूल स्वरूप धार्मिक एवं आध्यात्मिक था परंतु इस शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यक्गित एवं चारित्रिक गुण का विकास हुआ।

शिक्षा का प्रारंभिक स्वरूप वैदिकाल से निर्धारित होना शुरू हुआ। धीरे-धीरे समय के साथ-साथ एवं परिस्थितिनुसार शिक्षा के स्वरूप में परिवर्त्तन देखने को मिलते है, लेकिन शिक्षा का महत्व सभी काल में बना रहा। शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक एवं बहुमुखी प्रतिभा को निखारने का कार्य करती है। जहाँ एक ओर हम प्राचीन कालीन शिक्षा को देखते है तो पाते है कि उसका स्वरूप पूरी तरह धार्मिक होता था लेकिन समय के साथ -साथ उसका स्वरूप बदलने लगा है। आज के दौर में शिक्षा पूरी तरह रोजगारोन्मुख हो गई है। समय बदलने से शिक्षा भले ही अपनी स्वरूप बदल ले, लेकिन उसका मूल्य सदैव एक ही रहती है और वह है ''व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ''।

शिक्षा मानव को जीवन जीने की कला सिखाती है।चाहे किसी भी कालखण्ड में देखे, शिक्षा की महत्ता एवं उपयोगिता सदैव प्रासांगिक रहती है। शिक्षा मानव जीवन को समुन्नत तो तो बनाती ही है साथ हीं साथ उसे आकस्मिक घटनाओं एवं समस्याओं के प्रति सचेत भी करती है। मानव को भौतिक , अध्यात्मिक, सुखो की प्राप्ति शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होती है। प्रारंभ में जहाँ शिक्षा का स्वरूप पूर्णतया धार्मिक होता था वहीं आज के दौर में यह पूर्णतया भौतिक सुख- सुविधाओं के अर्जन में निमित्त रह गई है।

मुख्य रेखांकित शब्द : चिंतनशील, संश्लेषण, अध्यात्मिक, भौतिकवादी, संस्कृति ।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही शिक्षा का स्वरूप ज्ञानपरक सुव्यवस्थित और सुनियोजित था, इसमें प्रमुख रूप से लौकिक और परलौकिक जीवन के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी। दरअसल, प्राचीन काल में भौतिक और आध्यत्मिक जीवन के निर्माण तथा विभिन्न उत्तरदायित्वों के निर्वाहन में शिक्षा की नितांत आवश्यकता थी। वैदिक युग में ज्ञानी व्यक्ति को सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त थी। जब कोई व्यक्ति विद्या और ज्ञान से सम्पन्न हो जाता था तो उसे ऋषि -ऋण से मुक्त माना जाता था। इस काल में भौतिक की अपेक्षा बौद्धिक ज्ञान को विशेष महत्त्व दिया जाता था।

लेकिन, समय के साथ शिक्षा का स्वरूप बदलने लगा है समय एवं परिस्थितिवश शिक्षा जो कल तक केवल आध्यात्मिक एवं परलौकिक ज्ञान तक केन्द्रित थी उसका स्वरूप भौतिकवादी होने लगा है। पहले की शिक्षा एवं उसके उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृति उत्थान

से मूलतया प्रेरित होते थे। लेकिन समय की धारा के साथ - साथ शिक्षा का वह मौलिक स्वरूप तो आज भी बरकरार है लेकिन वर्त्तमान दौर में वह भौतिकवादी एवं जीविकोपार्जन में निमित्त बनकर रह गया है।

शिक्षा मनुष्य में चिंतन क्षमता को जागृत करने के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप से मनुष्य की कार्यक्षमता को भी प्रभावित करती है। इसके लिए हम ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में देखे तो पाते है कि जब मनुष्य ने आग एवं पहिये का आविष्कार किया तो धीरे-धीरे उसके व्यवहारिक प्रयोगों को अपनाने लगा। इसके पश्चात् उसमें ज्ञान के विस्तार का उदाहरण हम देखते है कि ताम्र, काँस्य एवं लौह का अविष्कार ने उन्हें हथियार, कृषि यंत्र एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं के निर्माण को प्रेरित किया।

शिक्षा का विस्तार तो समय के साथ होता ही गया साथ हीं साथ शिक्षा से व्यवहारिक प्रयोगों को भी बल मिला। प्राचीन कालीन वैदिक संस्कृतियों में जहाँ धार्मिक शिक्षाओं द्वारा लोगों के ज्ञान के स्तर को बढ़ाया वहीं साथ ही साथ अनके खोजों एंव अविष्कारों के कारण तकनीकी क्षमता का भी विकास हुआ। जो मानव शिक्षा में माध्यम से व्यक्तिगत रूप से बुद्धिमान हुआ, वहीं मानव उसके साथ- साथ तकनीकी एवं कौशल के ज्ञान से भी शिक्षित हुआ। इससे मानव सभ्यता का निरंतर विकास हुआ।

मानव के ज्ञान के स्तर में वृद्धि ने जहाँ एक ओर उन्नति ने मार्ग को प्रशस्त किया वहीं दूसरी ओर विध्वंसक व्यक्तियों को भी बढ़ावा दिया। दरअसल, तकनीकी शिक्षा के कारण हथियारों शस्त्रों तथा युद्ध सामग्रियों का भी विस्तार हुआ, जिसने उन्नति के अलावे विध्वंसकता को भी बढ़ावा दिया। ज्ञान का क्षेत्र असीमित है, व्यक्ति की कार्य क्षमता एवं सूझबूझ पर ही यह निर्भर है कि व्यक्ति उस ज्ञान का प्रयोग किस तरह करें वह इसे सृजनात्मक उपयोगों द्वारा संस्कृति को पराकाष्ठा के चरम पर भी पहुँचा सकता है या तो विध्वंसक, प्रवृत्तियों द्वारा ज्ञान का प्रयोग विनाशकारी शस्त्रों एवं युद्धों में लगाता है।

यह तो मानव के विवेक पर निर्भर करता है कि वह अपने ज्ञान को उपयेाग किस तरह से करता है। २०वीं शताब्दी के आरंभ में जब वैश्विक व्यवस्था जो कि पूरी तरह से आधुनिक एवं सम्पन्नशील मानी जा रही थी। ऐसे दौर में विश्व युद्धों ने विध्वंसकता का परिचय दिया। वहीं १७वीं शताब्दी के दौर में देखते है तो पाते है कि औद्योगिक क्रांति ने जहाँ लोगों के जीवन स्तर एवं उत्पादन में काफी उन्नति की उससे तो यह प्रतीत होता है कि ज्ञान की विध्वंसकता एवं सृजनात्मक क्षमता अद्भुत है।

वैसे सम्पूर्ण रूप में यदि हम शिक्षा एवं उसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाले तो हम पाते है कि यह मनुष्य के चरित्र एवं आचरण के उत्थान में सहायक होता है। दरअसल, मानव को मार्गदर्शन हेतु शिक्षा के आदर्श की आवश्यकता होती है। वह शिक्षित होकर जहाँ व्यक्तिगत रूप से चरित्र का उत्थान

करता है वहीं साथ ही साथ सामाजिक एवं सांस्कृति जीवन के उत्थान में महत्ति भूमिका का निर्वाहन भी करता है।

शिक्षा पर पर्याप्त प्रकाश डालने के लिए हमें इसके अवयवों पर भी प्रकाश माने जा सकते है। - पहला शिक्षक या गुरू दूसरा शिष्य । ये दोनों परस्पर शिक्षा को सार्थक रूप प्रदान करते है। शिक्षा स्वयं प्राप्त तो की जा सकती है, लेकिन अगर उसे सही दिशा न दी जाय तो वह अनियंत्रित अथवा दिशाविहिन भी हो सकती है। वहीं दूसरी ओर अगर शिक्षक के पास शिष्य ही ंनही होगें तो शिक्षा धीरे- धीरे स्वतः सामप्त ही हो जाएगी। शिक्षक और शिष्य परस्पर एक - दूसरे के पूरक होते है और शिष्य की योग्यता शिक्षक के गुणों पर ही निर्भर करती है। एक योग्य शिक्षक ना केवल अपने शिष्य के ज्ञान स्तर को बढ़ाता है बल्कि वह अपने शिष्य की कमियों को दूर करने उसे आकस्मिकताओं एंव आपात स्थितियों में धैर्य से उसका सामना करने के गुणों को भी विकसित करता है।

शिक्षा मानव जीवन को तो प्रभावित करती हीं है साथ हीं साथ परिवार समाज, राज्य, देश, विश्व आदि सभी को भी परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से भी प्रभावित करती है। शिक्षक और शिष्य एक दूसरे ने परिपाटी होते हैं इन दोनों के संयोग से ज्ञान एक अविरल धारा का प्रवाह होता है जो सम्पूर्ण मानव जीवन के अस्तित्व के लिए अनिवार्य तत्व होता है। लेकिन, इसका एक नकरात्मक पक्ष भी है। दरअसल, शिक्षा आज के वर्त्तमान दौर में पूरी तरह से व्यवसायिक स्वरूप ग्रहण कर चुका है और अब शिक्षक भी अपनी गरिमा के अनुसार काम नहीं कर रहे है। इसका बुरा प्रभाव हमारे समाज पर भी दिखाई पड़ रही है।

शिक्षित मुनष्य चाहे कही भी चला जाए उसे सदैव सम्मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है लेकिन अज्ञानी मनुष्य तिरस्कार का भागी बनता है। भारत में प्रारंभ से लेकर अब तक शिक्षा के स्वरूप दर्शन, आयाम आदि में कई परिवर्तन आए है। इनसे शिक्षा का स्तर बदला है। पहले जो शिक्षा मूल रूप से लौकिक-परलौकिक ज्ञान पर आधारित वह आज के दौर में तकनीकी, वैज्ञानिक एवं कौशल पर केन्द्रित हो गई है।

आवश्यकता एवं महत्त्व

जिस प्रकार आवश्यकता, अविष्कार की जननी होती है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा की आवश्यकता मानव जीवन के लिए अनिवार्य तत्व होता है। शिक्षा का महत्व मानव जीवन में इतना अधिक है कि इसके बिना मनुष्य का अस्तित्व भी नही रह सकता है। इन बातों को समझने के लिए हम एक उदाहरणा प्रस्तुत करते है- ''यदि मनुष्य को आपदा प्रबंधन का ज्ञान ना हो तो वह आस्मिक घटना की अवधि में अपनी जीवन की रक्षा कर पाने में पूरी तरह से असमर्थ होगा।''

इसी तरह शिक्षा मानव को समाज, देश, राष्ट्र एवं विश्व स्तर पर एकीकृत करने एवं समन्वय स्थापित करने में योगदान करता है। यह देश की एकता अखंडता तथा सम्प्रभुता की भी रक्षा करती है। आज देश की बागडोर देश के युवा वर्ग के कंधों पर है। युवा शिक्षा के द्वारा देश को वैज्ञानिक, साहित्य तकनीकी स्तर पर सशक्त बनाने का कार्य करता है। ज्ञान की सीमा नहीं होती है, ज्ञान सभी सीमाओं से परे होता है, इसलिए शिक्षा का महत्त्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक राष्ट्र को है ताकि प्रत्येक राष्ट्र विकसीत हो सके और सम्पन्न राष्ट्रो की तरह विकासशील की जगह विकसित राष्ट्रो की श्रेणी में अपना स्थान बना सके।

अध्ययन का उद्देश्य

शिक्षा के महत्व के सम्बन्ध में हमारे अध्ययन का उद्देश्य यह है कि जनमानस में शिक्षा भी असीमित संभावनाओं से अवगत कराकर उन्हें जागरूक एंव आत्मनिर्भर बनाना। प्रारंभ काल से हीं शिक्षा काफी महत्वपूर्ण रही थी जो कि आज और भी ज्यादा महत्वपूर्ण बन गई है। शिक्षा पर आलेख रचना का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के महत्व की सार्थकता को सिद्ध करना है। शिक्षा का स्वरूप दिन-प्रतिदिन बदल रहा है। आज के बदलते परिवेश में शिक्षा का स्तर बहुत ऊँचा हो गया है। शिक्षा आज वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी संस्कृति के सुत्रपात का कारक बन रही है। इस परिवेश में लोगों की आशाएँ भी शिक्षा के प्रति निरंतर बढती जा रही है।

शोध विधि

प्रस्तुत आलेख निर्माण हेतु शैक्षणिक दस्तावेजों, पुस्तकों, ग्रंथों संबंधित लेखा रचनाओं विभिन्न स्त्रोतों से तथ्यों का संकलन कर उसके मर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। इन तथ्यों के विश्लेषण एवं उसकी प्रासंगिकता को ध्यान में रख कर, इसे तैयार किया गया है।

परिणाम

प्रस्तुत आलेख में शिक्षा के निरंतर बढ़ते प्रभाव एवं उसकी महत्ता पर प्रकाश डालकर यह साबित करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा मानव जीवन के सर्वागीण विकास हेतु अनिवार्य तत्व है। यह मनुष्य को केवल शिक्षित हीं नही करता बल्कि यह मानव जीवन में बौद्धिक चेतना का संचार भी करता है। मानव जीवन को निर्देशित एवं उसकी प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करने में यह सतूत रूप से उपयोगी रहा है। शिक्षा के परिणामस्वरूप जहाँ मानव जीवन के स्तर में वृद्धि हुई है वहीं इसने वैज्ञानिक प्रगति

करके लोगों की समझ को निरंतर परिष्कृत किया है। वैदिकालीन शिक्षा जो प्रारंभ में धार्मिक, आध्यात्मिक, लौकिक - परलौकिक ज्ञान व आस्था तक सीमित थी। धीरे-धीरे आगे चलकर यह सामाजिक, व्यक्तिक, आर्थिक, राजीनीतिक, वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी स्वरूप को भी अपनाने लगा जिससे शिक्षा और अधिक समृद्धशाली बनी तथा लोगों के जीवन को और व्यापक रूप से प्रभावित करने लगी।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा स्वयं में अनेको निहितों को समेटे हुए है। इसके निहितार्थ को समझने के लिए हमें इसकी उपयोगिता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालना पड़ेगा। शिक्षा का महत्व इनता व्यापक है कि इसने परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र, विश्व, ब्रम्हांड सभी को अपने में समाहित कर लिया है। दरअसल, शिक्षा की प्रारंभिक शुरूआत घर से प्रारंभ होती है। इसके बाद शिक्षा का दायरा समाज तक फैलता है और व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। फिर व्यक्ति शिक्षा के कारण ही राज्य, राष्ट्र अथवा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाता है। आज वैज्ञानिक प्रगति में शिक्षा के कारण मानव को ब्रम्हांड के असीमित ज्ञान से परिचय कराया है। जिससे व्यक्ति चन्द्रमा, मंगल आदि ग्रहों एवं उपग्रहों तक अपनी पहुँच सुनिश्चित कर सका है। इस प्रकार इसका शैक्षिक निहितार्थ असीमित है।

भविष्य में शोध हेतु सुझाव

शिक्षा एक ऐसा पहलू है जो कि निरंतर प्रगतिशील रहा है। इसमें नित नए आयाम दृष्टिगोचर होते रहे है। यह दिन-प्रतिदिन अपने विस्तृत विस्तार क्षेत्र के कारण पाठकों एवं लेखकों के लिए शोध का प्रधान विषय रहा है और आगे भी इसकी महत्ता में वृद्धि की सम्भावनाएँ, अपार है। इस कारण शिक्षा के आयामों, स्वरूपों, तकनीकी एवं उसके प्रभावों को लेकर कई शोध पत्र तैयार किए जा सकते है। यह असीम क्षमता वाला क्षेत्र है। इस कारण भविष्य में शौधार्थियों के लिए यह सदैव हीं रोचक नवीन शोध तैयार करने का विषय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गोरे, एम०एस०इण्डियन एजुकेशनः स्ट्रक्चर एण्ड प्रोसेस, १९९५, रॉवत पब्लिकेशन, जयपुर।
- बासु, ए०एन० एजुकेशन इन मॉर्डन इण्डिया, १९४७, ऑरियन्ट बुक कंपनी,कलकता ।
- प्रेमी, एम०के० एजुकेशन प्लानिंग इन इण्डिया, १९७२, स्टेरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- मंसूरी, आई०के० भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, के०एस०के०- पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

- मिश्र, भास्कर शिक्षा दर्शन, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर , नई दिल्ली।
- तिलक गीता रहस्य, २०१४, शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद।
- अल्तेकर, ए०एस० प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति।
- गुप्ता, एस०पी० भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- मालती, सरस्वती भारतीय शिक्षा का विकास, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।